ANNEXURE - B

सारांश

नागपुर की सिन्धी महिलाओं का व्यवसाय एवं गृहउद्योगों में योगदान

("Nagpur Ki Sindhi Mahilaon Ka Vyavasay avum Gruhudyogo Main Yogdan")

इस परियोजना का सारांश निकाला गया तो ज्ञात हुआ कि नारी परम्परागत बन्धनों से मुक्त होकर व्यावसायिक एवं छोटे–छोटे गृहउद्योगों में कार्य करके आर्थिक विकास में योगदान दे रही है । उनके द्वारा सिलाई, कड़ाई, पापड़, बुटिक, ब्युटिपार्लर आदि व्यवसायों में संलग्नता से नागपुर शहर के जरीपटका, शान्तिनगर, खामला, कामठी आदि क्षेत्रों का आर्थिक विकास हुआ है एवं रोजगार का सृजन भी हुआ है । पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करने के साथ–साथ वह आर्थिक क्रियाओं में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । सीमित समय एवं साधनों को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की अध्ययन इकाइयों में 500 महिला उद्यमियों को अध्ययन की इकाई के रूप में चुना गया था महिलायें आज अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करने में सक्षम है । नागपुर के जरीपटका में जहाँ सिन्धी महिलाओं ज्यादातर रहती है वहाँ बुटिक, ब्युटीपार्लर, सिलाई–कड़ाई–बुनाई (गृहउद्योग) पापड़, बड़ी, चिप्स कई छोटे–छोटे गृह उद्योग चल रहे है इन्हें ये प्रेरणा इनके परिवार से परम्परागत रूप में ही प्राप्त है । शोध का मुख्य उद्देश्य इन परम्परागत उद्योगों का संरक्षण करना भी है । हस्तशिल्प कलाओं का विकसित करना इन महिलाओं को जरी वर्क, काँच वर्क, सुन्दर सुन्दर कड़ाई एवं अनेक प्रकार के फैशनेबल परिधानों का भी पारम्पारिक ज्ञान है जिन्हे हस्त शिल्प उद्योगों के द्वारा इन्होंने विकसित किया है । ज्वेलरी डिजाईनिंग, फैशन डिज़ाईनिंग, अचार, मुरब्बा, अनेक प्रकार के छोटे छोटे गृह–उद्योगों द्वारा इन्होंने आर्थिक सम्पन्नता हासिल की है । पहले सिर्फ निम्न वर्ग की स्त्रियाँ ही घरेलु हस्तशिल्पकार्यो के द्वारा जीविका उपार्जित करती थी किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ती के बाद यानि सिन्ध से भारत में आने पर मध्यमवर्ग की स्त्रियों द्वारा भी यह कार्य बड़ी ही कुशलता पूर्वक किया जा रहा है । शोध का सारांश यह है कि आज शिक्षा के विकास के कारण स्त्रियों का आत्मविश्वास, कार्यक्षमता एवं मानसिक स्तर में इतनी प्रगति हुई है कि वह आर्थिक क्षेत्र में भी अपनी सेवाएँ देकर देश के आर्थिक विकास में अपना

योगदान दे रही है और रोजगार का सृजन भी कर रही है । सरकार द्वारा यदि इन परम्परागत उद्योगों को ऋृण–सुविधा प्राप्त हो तो ये गृहउद्योग और भी पनप सकते है ।

शोध का उद्देश्य :

1) प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य सिन्धी महिलाओं द्वारा लघु उद्योगों, छोटे–छोटे हस्तशिल्प उद्योगों द्वारा रोजगार का सृजन करना एवं जातीय एवं वंशानुगतम व्यवसायों की रक्षा करना, उस विरासत को फैलाना या बढ़ाना, छोटे ऋण प्राप्त कराना है ।

2) छोटे–छोटे गृह उद्योगों में कार्यरत सिन्धी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना है ।

3) कम पूँजी से इन्हें आसानी से प्रारम्भ किया जा सकता है अतः इन छोटे – छोटे व्यवसायों के द्वारा रोजगार सृजन भी किया जा सकता है ।

4) परम्परागत उद्योगों का सन्तुलित विकास करना एवं किन विभिन्न स्रोतों द्वारा इन व्यवसायों को ऋण उपलब्ध कराया जा सकता है ।

5) नागपुर के आर्थिक विकास में सिन्धी महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना ।

6) सिन्धी महिलाओं द्वारा किये गये हस्तशिल्प एवं परम्परागत कौशल पर आधारित उद्योगों की और सरकार का ध्यान आकर्षित करना ।